कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐

विषय ....इतिहास....

परीक्षा का दिन ....शुक्रवार....

दिनांक ....15-03-2019....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ....

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 165/2019

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पु पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अ सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा स
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना न नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अ साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृ होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधि क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्र उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नही चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्ष ... अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोडकर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रक त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

Sl.No. : 041154

नामांक Roll No.

2	9	8	1	3	0	0

SS-13-Hist.

उत्तर 30

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2019

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2019

HISTORY

इतिहास

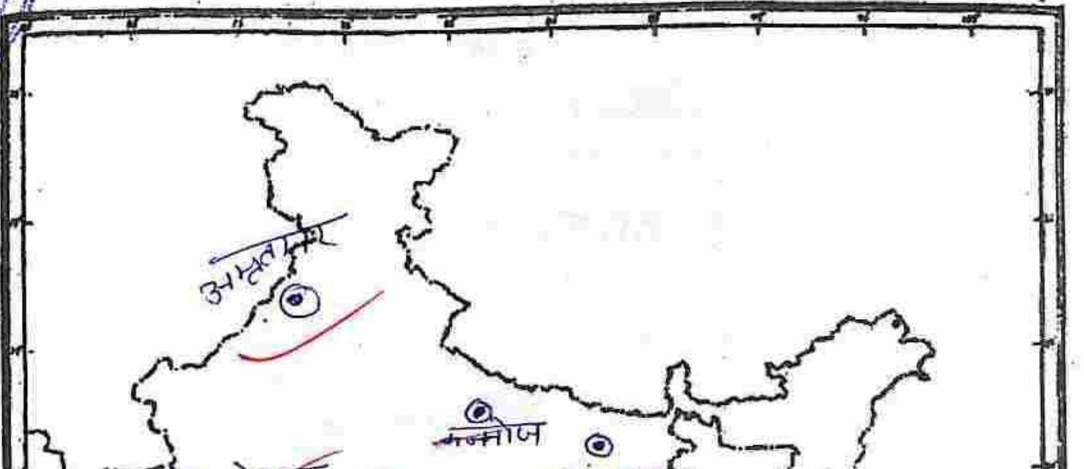

अंक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

प्रश्नोत्तर :-

1
⇒ ऋग्वेद में 10 (दश) मण्डल है।

2
⇒ हर्षचरित :- बाणभट्ट

3
⇒ विक्रम सवत की शुरुआत :- 57 ई.पू.

4
⇒ मिलिन्दपन्हो भाषा :- पाली भाषा

5
⇒ गांधार कला के निर्माता युनानी तथा विषय वस्तु भारतीय होने के कारण इसे ग्रीको-बुद्धिष्ट कहा जाता है।

6
⇒ चतुर्थ बोद्ध संगीति का उद्देश्य सभी बौद्ध ग्रन्थो का गहराई से अध्ययन करके उनका संकलन करना।

7
⇒ पृथ्वीराज चौहान का राजकवि :- चन्दबरदाई

8
⇒ महाराष्ट्र मे पुना के निकट शिवनेर के पहाडी किले मे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9
⇒ गाजी की उपाधि धारण की ।

10
⇒ विजय स्तम्भ को "भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष" कहा जाता है क्योंकि यहा पर सभी शैलियो की मूर्तियो से स्तम्भ को सजाया हुआ है। (सभी हिन्दु देवी देवता की मूर्तिया)

खण्ड - ब

प्रश्नोतर :-

11
⇒ वैदिक साहित्य को सही सरल व सहज तरीके से समझने के लिए वेदाग साहित्य की रचना हुई। वेदाग छः थे। शिक्षा, कल्प, व्याकरण निरुक्त छन्द, तथा ज्योतिष है।

12
⇒ पुराणो की संख्या 18 (अठारह) थी। सबसे प्राचीन पुराण मत्स्य पुराण है।

13
⇒
(i) इंडिका - मेगस्थनीज
(ii) मृच्छकटिकम - शुद्रक
(iii) पचतत्र - विष्णुशर्मा
(iv) राज तरगीणी - कल्हण

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

14
⇒ रूद्रदामन ने संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के लिए सन 150 ई. मे संस्कृत भाषा मे जुनागढ़ अभिलेख जारी करवाया था, रूद्रदामन द्वारा संस्कृत भाषा मे अभिलेख जारी करवाना इस बात का संकेत है कि रूद्रदामन ने संस्कृत भाषा को बढ़ावा दिया।

15
⇒ मुगलो द्वारा महाराणा प्रताप की सेना का पीछा न करने के दो कारण निम्न है–
(i) जुन माह की जलाने वाली भीषण गर्मी के कारण, तथा
(ii) प्रताप की सेना का पहाड़ो मे घात लगाए बैठे रहने का डर।

16
⇒ 1857 की क्रांति का तात्कालीक कारण चर्बी वाले कारतूस थे। अंग्रेजो ने पुरानी मिसाइल के स्थान पर नवीन मिसाइल एनफिल्ड का प्रयोग शुरू किया जिसे मुँह से खोलना पड़ता था। इन मिसाइलो के खोलने के स्थान पर सुअर व गाय का मांस लगाया जाता था इसे हिन्दु तथा मुसलिमो ने अपने धर्म को भ्रष्ट करने का कारण

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

समझा तथा 10 मई 1857 को मेरठ छावनी में विद्रोह की शुरुआत हुई।

17
⇒ बालगंगाधर तिलक द्वारा प्रकाशित दो समाचार पत्र :-
(i) मराठा
(ii) केसरी

18
⇒ बिजोलिया किसान आंदोलन के दो नेता - (i) विजय सिंह पथिक
(ii) साधु सीताराम दास।

खण्ड - स
प्रश्नोत्तर :-

19
⇒ सिन्धु सरस्वती सभ्यता को के लोगों की आर्थिक स्थिति उन्नत थी वहा के लोगो का सामाजिक जीवन अच्छा था। सिन्धु सरस्वती सभ्यता के लोग व्यापार भी करते थे। वहा पर आन्तरिक व्यापार की उन्नत व्यवस्था के लिए उचित सड़को का प्रबन्ध था तथा साथ

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ही वहाँ से मनके उद्योग, धातु उद्योग तथा सैनी उद्योगो के अवशेष भी मिले है इसके साथ ही वहा पर ~~मट~~ बर्तन उद्योग भी विकसित थे।

विदेशी व्यापार :- सिन्धु सभ्यता के लोगो का व्यापार जावा, सुमात्रा, मोसोपोटामिया तथा श्रीलंका के साथ था, मोसोपोटामिया से व्यापार के अवशेष मिले है यहां पर वार की व्यवस्था भी थी।

20 → ~~हर्षवर्धन~~ ने कन्नौज सभा ~~सन~~ व प्रयाग सभा की स्थापना की।

~~हर्षवर्धन~~ ने सन् 343 ई में प्रयाग मोक्ष परिषद का आयोजन किया, यह सभा गंगा व यमुना नदी के संगम स्थल पर आयोजित की गई। इसमे ह्वेनसांग ने अपने 18 राजसी मित्रो के साथ भाग लिया था, इसमे नालन्दा विश्व-विद्यालय के लगभग 3 हजार हिनयान तथा 3 हजार महायान बौद्ध भिक्षुओ ने भाग लिया इसके साथ-साथ अन्य धर्म के अनुयायियो ने भी भाग लिया, इस सभा मे जैन धर्म के अनुयायीयो ने भी भाग लिया। इस सभा मे अनेक लोगो को दान दिया गया तथा बौद्ध धर्म का प्रचार

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रचार करने के लिए विदेशो मे
बोद्ध भिक्षुओ को भेजा गया इ
प्रकार इस सभा का आयोजन

21
⇒ "कनिष्क बौद्ध धर्म का महान सर
था" - कनिष्क को बौद्ध धर्म क
सरक्षक तथा रक्षक होने के का
इसे दुसरा अशोक भी कहा ज
है। कनिष्क ने अपने शासन का
मे बोद्ध धर्म के प्रचार के लि
चतुर्थ बौद्ध सगीति का आयोजन
कश्मीर के कुण्डलवन किया। जिस
बौद्ध धर्म हिनयान तथा महायान
शाखाओ मे विभक्त हुआ। इस
अतिरिक्त कनिष्क ने बौद्ध धर्म
सरक्षण के लिए कन्नौज महासभ
प्रयाग - मोक्ष परिषद का भी
आयोजन किया। कनिष्क ने अ
शासन काल मे बोद्ध धर्म के
प्रचार के लिए बोद्ध भिक्षुओ
विदेशो मे भेजा। कनिष्क न
बोद्ध धर्म को राजाश्रय प्रदान
किया तथा इसका प्रचार कि
अत: कनिष्क बौद्ध धर्म का म
सरक्षक था।

अंक द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

22
⇒ अलाउद्दीन खिलजी के रणथम्भौर पर आक्रमण के चार कारण है-

(i) रणथम्भौर सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, रणथम्भौर सामरिक महत्व अधिक था तथा यहा से गुजरात तथा मालवा के लिए रास्ता जाता था यह व्यपारिक दृष्टि से भी महत्वपुर्ण था।

(ii) खिलजी की साम्राज्यवादी महत्वकाक्षा के कारण खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया।

(iii) रणथम्भौर दिल्ली के निकट था अतः रणथम्भौर दिल्ली के निकट होने के कारण खिलजी ने वहा आक्रमण किया।

(iv) अलाउद्दीन के चाचा जलालुद्दीन ने रणथम्भौर विजय के प्रयास किये किन्तु असफल रहे अत: अलाउद्दीन ने अपने चाचा की पराजय का बदला लिया।

23
⇒ 1779 की वड़गाँव की संधि अंग्रेजो के लिए अपमानजनक थी क्योकि इस सन्धि की शर्ते निम्न थी-

(i) मराठो द्वारा विजित क्षेत्रो को अंग्रेजो को वापस देना पड़ा।

(ii) अंग्रेजो को 41000 रुपए फौज के

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रूप मे चुकाने पड़े ।
(ii) भड़ोस की आय सिन्धिया को दी जाएगी ।
(iii) दो अग्रेज अधिकारी (कोर्मट व स्टीवर्ट) बन्धक के रूप मे मराठो के पास रहेगें ।
(iv) पेशवा का पद राघोबा को सौप गया ।
ये सभी शर्ते अग्रेजो के लिए अपमानजनक थी ।

24 ⇒ बक्सर का युद्ध अग्रेजो तथा अवध व बगाल के नवाब व बादशाह आलम के मध्य लड़ा गया । इस युद्ध मे अग्रेजो की विजय हुई तथा बगाल अवध तथा दिल्ली तिनो अग्रेजो के अधि हो गए । अब अग्रेजो को भा के तीन बड़े-बड़े प्रान्त हाथ लग गए थे तथा अग्रेजो विरुद्ध सिर उठाने वाला को राज्य नही रहा था ।
(i) बक्सर युद्ध के बाद अग्रेज को पैर जमाने का मौका मि गया ।
(ii) बक्सर युद्ध के बाद अग्रेज

जांचकर्ता द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

का विरोध करने वाला कोई नहीं रहा।
(iii) इस युद्ध के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापार के अनेक मौके भी मिल गए।
अत: बक्सर की युद्ध की विजय ने अंग्रेजो को भारत मे ईस्ट इंडिया कंपनी को अखिल भारतीय शक्ति बना दिया।

25 → "स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रीय दृष्टिकोण वर्तमान संदर्भ मे भी प्रासंगिक है"
स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय युवा पीढ़ी को राष्ट्रीय प्रेम के प्रति जागृत किया। उन्होने युवाओ को राष्ट्र के प्रति समर्पण का सन्देश दिया तथा धर्म-सरक्षण को भी महत्व दिया उन्होने सभी धर्मो को समानता दी तथा राष्ट्रप्रेम राष्ट्रधर्म को सर्वोच्च बताया। स्वामीजी ने युवाओ को प्रेरित करते हुए कहा - "उठो, जागो और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।
इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रीय दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक आज की युवा पीढ़ी स्वामीजी के विचारो से राष्ट्रप्रेम को महत्व दे रही है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

26
⇒ सीकर किसान आंदोलन के प्रमुख कारण निम्नलिखित है –
(i) सीकर के जमीदारो द्वारा लाग-बा करो को बढ़ाना :- सीकर के किसानो पर कर अधिक हो गया था तथा किसान व गरीब का वहन करने मे असफल थे।
(ii) बेगार लिया जाना :- सीकर के किसानो से बेगार ली जाती थी उनसे कार्य करवाया जाता था त पैसे नही दिये जाते थे। जिससे किसानो मे असंतोष बढ़ा।
(iii) किसानो के साथ दुर्व्यवहार :- सीकर के किसानो के साथ अपमान-जनक व्यवहार किया जाता था।
(iv) फसल के खराब होने पर भी कर लेना :- फसल खराब होने स्थिति मे भी कर व्यय किया जाता था।

27
⇒ राजस्थान मे राजनीतिक चेतना प्रचार मे समाचार पत्रो व साहि का योगदान :- राजस्थान की राजनीतिक चेतना मे समाचार प व साहित्य ने महत्वपूर्ण योगदा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

दिया, राजस्थान मे समाचार पत्रो व साहित्य ने लोगो मे नवीन चेतना जगाई लोगो को विचारो को जानने का अवसर मिला, लोगो मे स्वतन्त्रता की जानकारी मिली, राजस्थान मे प्रमुख समाचार पत्र - राजपुताना गजट नवीन राजस्थान, तरुण राजस्थान आदि समाचार पत्रो से अंग्रेजो की नीतियो लोगो के सामने आई तथा अनेक स्थानो पर हो रहे आन्दोलनो से लोग प्रभावित हुए तथा उनमे नवीन राष्ट्रीय चेतना का भी उदय हुआ, समाचार पत्रो के अतिरिक्त साहित्य ने भी लोगो मे जनजागृति की भावना जगाई विभिन्न नाटको तथा रचनाओ से लोग प्रभावित हुए साहित्यकारो ने उस समय की सामाजिक धार्मिक राजनीतिक व आर्थिक स्थिति को अपने साहित्य का विषय बनाया। विभिन्न रचनाओ को पढ कर लोगो मे एक नवीन सोच का विकास हुआ।

खण्ड - द

०

०

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्नोतर -

28 → अशोक मौर्य वंश का महान शासक था अशोक ने अपने शासन काल मे मौर्यकालीन सता को उच्चतम स्थान दिलाया ,

अशोक का धम्म :- अशोक ने विभि[न्न] धर्मों संस्कृतियो तथा समाजो को एकसूत्र मे बांधने के लिए जिन विचारो तथा आचारो की संहित[ा] प्रस्तुत की उसे अशोक का ध[म्म] कहा जाता है ।

* धम्म के सिद्दांत :-

(i) सहिष्णुता :- विभिन्न धर्मों व सम्प्रदायो के मध्य सामंजस्य स्थापित हो ,

(ii) अहिंसा :- हिंसा का परित्या[ग] करना तथा सदैव शान्ति की स्थापना पर बल देना ।

(iii) आडम्बरहीनता :- अशोक ने धम्म मे आडम्बरो तथा पाखण्[ड] को महत्व नही दिया उसने यज्ञो अनुष्ठानो के स्थान पर जनकल्याण को महत्व दिया ।

(iv) अशोक ने पशु बलि का

जाँचक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विरोध किया।

(iv) श्रेष्ठ मानव जीवन :- अशोक ने श्रेष्ठ मानव जीवन को महत्व दिया अशोक ने शांतिपूर्ण व सौहार्दपूर्ण जीवन को महत्व दिया।

(v) लोककल्याण :- अशोक ने लोककल्याण-कारी जीवन जीने की प्रेरणा दी। अशोक ने लोक-कल्याण को महत्व दिया।

☆ अशोक की जनकल्याणकारी अवधारणा :-

(i) लोककल्याणकारी कार्य :- अशोक ने अपनी समस्त राशी का उपयोग जनकल्याण में किया। अशोक ने जनता के कल्याण के लिए विभिन्न कुओं, नलकुपों का निर्माण करवाया अशोक ने जनकल्याण के लिए नहरों का निर्माण भी करवाया था

(ii) युद्ध की नीति का परित्याग :- अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद युद्ध नीति का त्याग किया तथा शान्ती की स्थापना के लिए धम्म का प्रतिपादन किया।

(iii) प्रजा से प्रत्यक्ष संपर्क :- अशोक ने प्रजा से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित किया तथा लोगों के

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

के सुख-दुख को जाना, अशोक ने (iv) राजुको आदि पदो की नियुक्ति की। इसके अतिरिक्त अशोक ने गुप्तचर प्रणाली की भी स्थापना की।

29 → स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक सुधार के साथ-साथ उनके राजनीतिक व धार्मिक विचार :-
स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की तथा जनकल्याण को महत्व दिया। स्वामी जी ने सामाजिक धार्मिक व राजनीतिक सुधार मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो निम्नानुसार है।

(i) सामाजिक सुधार :- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जनकल्याण की बात कही इन्होने सत्य पर अडिग रहने को महत्व दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन 1875 मे आर्य समाज की स्थापना की तथा लोगो मे जागृति का सन्देश दिया। स्वामी दयानन्द सरस्व

अंक द्वारा दत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

ने "वेदों की ओर लौटो" नारा दिया

* स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाए :-
(i) ईश्वर एक है तथा सर्वव्यापी है
(ii) वेद ज्ञान के भण्डार है।
(iii) ईश्वर मे आस्था ही ज्ञान को बढाती है।
(iv) सत्य पर अडिग रहो।
(v) असत्य तथा बुराईयो का विरोध करो। आदि।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिन्दी भाषा के महत्व को बढाना चाहा।

☆ राजनीतिक विचार :- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राजनीतिक क्षेत्र मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वदेश स्वधर्म, स्वराज्य, स्वभाषा को महत्व दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वाधीनता के लिए आधिकारिक संघर्ष किया।

(i) स्वामी दयानद सरस्वती स्वदेशी राज्यो का समर्थन करते थे वे विदेशो के विरोधी थे।
(ii) स्वामी दयानद सरस्वती ने स्वराज्य के लिए स्वराज्य चीजो के उपयोग को महत्व दिया।
(iii) स्वामी दयानद सरस्वती ने स्वराज्य

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		प्राप्ति के लिए स्वधर्म, स्वभाषा व स्वशिक्षा को महत्व दिया।
		(iii) धार्मिक विचार :- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म को महत्व दिया उन्होने सनातन धर्म के अन्दर आए आडम्बरो व पाखण्डो का विरोध किया तथा "वेदो की ओर लौटो" नारा दिया।
		स्वामी जी ने सनातन धर्म के साथ-साथ ईसाई व इस्लाम धर्म मे भी सुधार लाने का प्रयास किया। स्वामीजी के राजनीतिक विचारो मे भी "स्वधर्म" को महत्व दिया
	30 =>	मानचित्र
		(i)
		समाप्त

क द्वारा त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-1652019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 16/2019

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB/163/2019